

विशिष्ट सारांश

भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान (भा.कृ.सां.अ.सं.) की स्थापना सन् 1959 में कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान के रूप में हुई तभी से यह संस्थान कृषि सांख्यिकी में अनुसंधान के साथ-साथ शिक्षण/प्रशिक्षण करने का महत्वपूर्ण दायित्व निभा रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रही प्रगति के दृष्टिगत इस संस्थान ने स्वयं को कृषि अनुसंधान की वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप ढाल लिया है। इस परिवर्तित परिवेश में, संस्थान को सौंपे गये कार्य हैं - सांख्यिकी में मौलिक, अनुप्रयुक्त और अनुकूली शोध करना, कृषि सांख्यिकी एवं संगणक अनुप्रयोग में स्नातकोत्तर एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाना, परामर्श सेवाएँ प्रदान करना, अनुसंधान हेतु कृषि सांख्यिकी में सूचना कोष के रूप में कार्य करना, कृषि सांख्यिकी एवं संगणक अनुप्रयोग में श्रेष्ठ शिक्षा व प्रशिक्षण के एक उन्नत केन्द्र के रूप में संस्थान को विकसित करना, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के अन्य संस्थानों एवं राज्य कृषि विश्वविद्यालयों (रा.कृ.वि.), राज्य कृषि/पशुपालन विभागों के साथ सम्पर्क बढ़ाना, राष्ट्रीय कृषि सांख्यिकी प्रणाली को विकसित करने एवं सुदृढ़ बनाने में सहायता करना तथा इन विषयों में राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय संगठनों के द्वारा प्रायोजित अनुसंधान करना और प्रशिक्षण प्रदान करना।

इस वर्ष संस्थान के विभिन्न प्रभागों - प्रतिदर्श सर्वेक्षण, परीक्षण अभिकल्पना, जैवमिति, पूर्वानुमान तकनीक, अर्थमिति एवं संगणक अनुप्रयोग में अनेक अनुसंधान परियोजनाएँ चलायी गयीं। संस्थान में विभिन्न महत्व वाले क्षेत्रों में कुल 27 अनुसंधान परियोजनाओं के अन्तर्गत अनुसंधान कार्य किया गया जिनमें से 16 परियोजनाएँ संस्थान द्वारा, 5 ए.पी. सेस फण्ड द्वारा तथा 6 बाह्य एजेंसियों द्वारा वित्त पोषित थीं। इस वर्ष 7 परियोजनाएँ पूरी हो चुकी हैं तथा 4 नयी परियोजनाएँ आरम्भ की गयीं।

कुछ प्रमुख अनुसंधानिक उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं:

- असममित बहु-उपादानीय परीक्षणों के लिए सुपर सेचुरेटेड अभिकल्पनाओं (एस.एस.डी.) की तीन श्रृंखलाएँ विकसित की गयीं। इन अभिकल्पनाओं का विभिन्न दक्षता मानकों के आधार पर इष्टतमत्व के लिए मूल्यांकन किया गया। अभिकल्पनाओं के कैटलॉग भी तैयार किये गये।
- अर्ध-प्रसामान्य अथवा प्रसामान्य रूप में 1000 आकार तक के

हैडामार्ड मैट्रिसेस ऑनलाइन तैयार करने के लिए वेब आधारित सॉफ्टवेयर विकसित किया गया। 668, 716 तथा 892 आकारों के लिए कोई संरचना विधि उपलब्ध नहीं थी इसलिए इन आकारों की मैट्रिसेस को इस सॉफ्टवेयर में शामिल नहीं किया गया।

- 'डिजाइन रिसोर्सेस' पर क्रमशः 36, 50 और 34 से कम उपचारों की संख्या, ब्लॉकों एवं ब्लॉक आकारों की सभी सम्भव युग्मवार उपचार तुलनाओं के लिए 6574 अपूर्ण द्विआधारी ब्लॉक अभिकल्पनाएँ जोड़ी गईं जबकि औसतन उपचारों की संख्या 20 से ज्यादा न हो। इन अभिकल्पनाओं की A- एवं D-दक्षता भी दी गयी। यह अभिकल्पनाएँ उच्च दक्षता वाली हैं तथा परीक्षणकर्ताओं द्वारा हमेशा इनका उपयोग किया जा सकता है।
- पूर्ण बहु-अनुक्रिया परीक्षणों की ब्लॉक अभिकल्पनाओं के विश्लेषण के लिए एक क्रमवार विश्लेषण विधि विकसित की गयी, जबकि प्रत्येक उपचार के अनुप्रयोग के लिए एक से ज्यादा अनुक्रिया चरों के प्रेक्षण अभिलिखित थे। सर्वोत्तम उपचार की पहचान हेतु युक्लीडियन डिस्टेंस एवं J-प्लॉट पर आधारित विधि विकसित की गई।
- बहु-प्रतिक्रिया परीक्षणों में आउटलायर्स की समस्या के समाधान के लिए, एक ब्लॉक अभिकल्पना में पूर्ण बहु-प्रतिक्रिया परीक्षणों में एकल आउटलायर सदिश का पता लगाने के लिए एक परीक्षण सांख्यिकी विकसित की गयी। यह सांख्यिकी ब्लॉक अभिकल्पना में एकल प्रतिक्रिया चर के लिए कुक-स्टेटिस्टिक के आधार पर विकसित की गयी। उदाहरण के द्वारा प्रस्तावित टेस्ट स्टेटिस्टिक की व्याख्या की गयी।
- तीन धारकों के लिए सेल्फ-कॉम्प्लीमेंट्री ग्रुप डिवीजिबल अभिकल्पनाओं की सहायता से 11 से कम पुनरावृत्ति की संख्या एवं ब्लॉकों के आकार वाली एक्सटेन्डेड ग्रुप डिवीजिबल (ई.जी.डी.) अभिकल्पनाएँ विकसित की गयीं, जो बिना किसी सूचना की कमी के सभी मुख्य प्रभावों का आकलन पूर्ण दक्षतापूर्वक करती हैं, ऐसी अभिकल्पनाओं के साथ-साथ मुख्य प्रभावों तथा अन्योन्य क्रियाओं का एक कैटलॉग भी तैयार किया गया।

- नीड़ित ब्लॉक अभिकल्पना सेटअप में उप-ब्लॉकों के प्रेक्षणों में नजदीकी निकटवर्ती सहसम्बन्ध संरचना तथा बड़े ब्लॉकों में उप-ब्लॉक वर्गीकरण की अवगणना करते हुए शून्य सहसम्बन्ध संरचना के लिए नीड़ित ब्लॉक अभिकल्पनाएँ प्राप्त की गयीं।
- 2-कलर माइक्रोअरे परीक्षणों के लिए दक्ष अभिकल्पनाएँ प्राप्त की गयीं तथा माइक्रोअरे परीक्षणों से विभिन्न जीनों की पहचान करने के लिए अरे प्रभावों को यादृच्छिक रूप में लेते हुए, मिश्रित प्रभावों के मॉडलों पर आधारित विश्लेषणात्मक प्रक्रिया विकसित की गयीं।
- इन्डो-गैनेटिक प्लेन्स में राइस-व्हीट कन्सोरटियम के द्वारा संचालित किसान सहभागी अनुसंधान परीक्षणों से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के लिए रैखिक मिश्रित प्रभाव मॉडलों एवं उप-प्लॉटों पर आधारित विश्लेषणात्मक प्रक्रिया विकसित की गयीं।
- कृषि वानिकी परीक्षणों के द्वारा यह ज्ञात हुआ कि वृक्ष, वर्ष तथा इसकी अन्योन्य क्रिया (वृक्ष × वर्ष) का मुख्य फसल जौ की उपज पर सार्थक प्रभाव पड़ा। फसल की उपज पर सिरिस, नीम और शीशम का प्रभाव लगभग एक जैसा था परन्तु बबूल के प्रभाव से अधिक था। इसी प्रकार, चने के 6 वर्षों के आँकड़ों का प्रयोग करके मिश्रित विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि वृक्ष, दूरी, वर्ष, वृक्ष × वर्ष एवं दूरी × वर्ष का उपज पर सार्थक प्रभाव पड़ा।
- NN तथा AR(1) त्रुटि संरचनाओं के सहसम्बन्ध गुणांक के विभिन्न मानों के लिए क्लेटवर्दी (1973) में उपलब्ध 21 BIB की दक्षताओं, $v \leq 10$ के लिए जी.डी. अभिकल्पनाओं तथा 18 चक्रीय अभिकल्पनाओं पर कार्य किया गया।
- सांख्यिकीय एवं एल्गोरिथमिक पद्धति के द्वारा पुनरावृत्त मापक अभिकल्पनाओं में उपचारों के समुन्त आकलन के लिए SPRMD (स्टेटिस्टिकल पैकेज फॉर रिपिटेड मेजरमेन्ट्स डिजाइन्स) में एक निविष्टि आँकड़ा प्रबन्धन माड्यूल विकसित किया गया।
- दो आउटलाइंग प्रेषणों की उपस्थिति में सभी द्विआधारी प्रसरण सन्तुलित ब्लॉक अभिकल्पनाएँ रॉबस्ट पाई गईं। उपचार कन्ट्रास्ट की जाँच के लिए एक रॉबस्ट परीक्षण प्रक्रिया विकसित की गयी। इस परीक्षण प्रक्रिया को परीक्षणात्मक आँकड़ों में भी अनुप्रयुक्त किया गया।
- विभिन्न फसल प्रणालियों में प्रयुक्त फासफोरस की मात्रा तथा बारम्बारता के निर्धारण सम्बन्धी परीक्षणों के सांख्यिकीय विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि विभिन्न क्षेत्रों में एकान्तर वर्षों के विभिन्न मौसमों में विभिन्न फसल अनुक्रमों जैसे - चावल-चावल, चावल-मूँगफली, चावल-गेहूँ, चावल-चना में फासफोरस के अधिकतम उपयोग के लिए P_2O_5 की विभिन्न दरें प्रति हेक्टेयर डालना किफायती हो सकता है।
- स्टेट स्पेस मॉडलों के उपयोग से फसल पूर्वानुमान पर किये गये आकलन के अन्तर्गत महाराष्ट्र तथा अखिल भारतीय स्तर पर कपास के क्षेत्रफल उत्पादन तथा उत्पादकता के लिए 30 वर्षों (1970-71 से 1999-2000) के आँकड़ों का उपयोग करके चर-घातांकी मसृषकारी मॉडल, एरिमा तथा स्टेट स्पेस मॉडलों का विकास किया गया। वर्ष 2000 के बाद के वर्षों के अधिकतर पूर्वानुमानों में चर घातांकी तथा एरिमा मॉडलों की अपेक्षा स्टेट स्पेस मॉडल बेहतर पाये गये।
- मेघालय में कृषि सांख्यिकी के एकत्रीकरण हेतु सुदूर संवेदन आधारित पद्धति विकसित करने हेतु अध्ययन के अन्तर्गत राज्य की 6 महत्वपूर्ण फसलों - आलू, अदरक, अनानास, केला, मक्का और धान की सुदूर संवेदन एवं सर्वेक्षण आँकड़ों की संयुक्त सूचना के द्वारा कृषि सांख्यिकी की संरचना करने के प्रयास किये गये।
- निजी क्षेत्रों की सर्वेक्षण क्षमताओं के मूल्यांकन पर अध्ययन के अन्तर्गत एक प्रारम्भिक रिपोर्ट तैयार की गयी जिसमें सार्वजनिक/निजी क्षेत्रों की एजेंसिज की सर्वेक्षण क्षमताओं के मूल्यांकन हेतु एक प्रश्नावली है जो परामर्शदाताओं के लिए उपयोगी है।
- बागबानी फसलों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन के आकलन के लिए एक वैकल्पिक पद्धति विकसित करने हेतु मार्गदर्शी अध्ययन के अन्तर्गत महाराष्ट्र एवं हिमाचल प्रदेश के विभिन्न जिलों में प्राथमिक आँकड़ों के एकत्रीकरण का कार्य किया गया।
- कपास उत्पादन के सरकारी एवं ट्रेड आकलकों में विचरण के कारणों की जांच हेतु अध्ययन के अन्तर्गत महाराष्ट्र की राज्य सरकार द्वारा कपास के क्षेत्रफल एवं उत्पादन के आकलन हेतु अपनाई गयी प्रतिचयन अभिकल्पनाओं एवं आकलन प्रक्रिया (सरकारी आकलन) की समीक्षा की गयी।
- फसल राजस्व बीमा के अन्तर्गत क्षतिपूर्ति एवं बीमा-किस्तों (प्रीमियम) दरों की माप हेतु एक अर्थमितीय पद्धति पर अध्ययन किया गया। कर्नाटक एवं उत्तर प्रदेश राज्यों की राजस्व बीमा-किस्त

की दरों की तुलना से ज्ञात हुआ कि कर्नाटक राज्य की तुलना में उत्तर प्रदेश में अधिकतर फसलों के लिए बीमा-किस्त की दरें कम थीं।

- भारत में प्रमुख फलों एवं सब्जियों की मांग एवं आपूर्ति की लोच के आकलन का अर्थमितीय अध्ययन किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि भारत के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के परिवारों में विभिन्न वर्षों में विभिन्न सब्जियों एवं फलों के उपभोग की प्रवृत्ति में बढ़ोतरी हुई।
- फसलों में न्यूरल नेटवर्क आधारित पूर्वानुमान मॉडलिंग पर अध्ययन के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश के पूर्वी मैदानी क्षेत्र (इलाहाबाद, वाराणसी, फैजाबाद एवं बलिया); केन्द्रीय मैदानी क्षेत्र (कानपुर, लखनऊ, फतहपुर एवं हरदोई) एवं बुन्देलखण्ड क्षेत्र (झांसी, बाँदा एवं जलौन) में चावल और गेहूँ की उपज के पूर्वानुमान के लिए बहुस्तरीय पर्सप्ट्रॉन (एम.एल.पी.) आर्कीटेक्चर की सहायता से मॉडल विकसित किये गये, जिसमें फसल उपज को आश्रित चर तथा अधिकतम व न्यूनतम तापमान, वर्षा एवं प्रातः कालीन सापेक्ष आर्द्रता के आँकड़ों को निविष्टि चरों के रूप में लिया गया। अध्ययनाधीन जिलों के लिए चावल एवं गेहूँ के पूर्वानुमान प्राप्त उपज के निकट पाए गये। नाशीजीवों की संख्या की पूर्वचेतावनी के लिए, नागपुर में कपास में अमेरिकन बॉलवार्म (1985-2001) तथा पिक बॉलवार्म (1985-95) एवं कानपुर में अरहर में हेलिकोवपा आर्मीगेरा (1983-2002) साप्ताहिक पश्च मौसम चरों को निविष्टि चर लेकर (कपास को नाशीजीवों के लिए 1-2 सप्ताह तथा एच. आर्मीगेरा के लिए 1-5 सप्ताह) मॉडल विकसित किये गये। अधिकतर पूर्वानुमान वास्तविक संख्या के निकट पाये गये।
- न्यूरल नेटवर्क के उपयोग से सम्पादन एवं आरोपण पर एक अन्य अध्ययन में, न्यूरल नेटवर्क एवं समाश्रयण के उपयोग से आरोपण की तुलना की गयी। समाश्रयण आरोपण की तुलना में न्यूरल नेटवर्क आरोपण अधिक बेहतर पाया गया।
- जीनोटाइप x वातावरण सम्बन्धी आँकड़ों के अप्रसामान्य होने पर अप्राचलिक स्थायित्व युक्तियों के कार्यनिष्पादन पर सांख्यिकीय अन्वेषण नामक अध्ययन के अन्तर्गत उपज एवं स्थायित्व की जीनोटाइप के चयन के लिए उपयोगी विभिन्न चयन युक्तियाँ विकसित की गयीं। ज्ञात हुआ कि जीनोटाइप की बढ़ती संख्या के लिए पावर में वृद्धि हो रही थी। कुछ नयी अप्राचलिक

स्थायित्व युक्तियाँ भी विकसित की गयीं।

- स्थायी एवं रॉबस्ट गुच्छ प्रक्रियाओं पर अन्वेषण नामक अध्ययन के अन्तर्गत गुच्छ विधियों के विभिन्न संयोजनों के प्रति अप-वर्गीकरण की बारम्बारता तथा दूरी माप प्राप्त किये गये। प्रतिशत अप-वर्गीकरण के संदर्भ में, प्रस्तावित चर चयन विधि तथा विभिन्न गुच्छ विधियों पर आउटलायरो के प्रभाव की भी जांच की गयी।
- जटिल रोगों आनुवांशिक नेटवर्क्स एवं विकास में क्रियाशील एस.एन.पी. की पहचान एवं वैधीकरण पर अध्ययन के अन्तर्गत ऐरेबिडोप्सिस एवं मानव जातियों की सम्बद्ध साइट्स पर एस.एन.पी. की पहचान के लिए एक नयी प्रक्रिया विकसित की गयी।
- कृषि अनुसंधान, शिक्षा एवं अन्य सम्बन्धित पहलुओं पर विभिन्न स्रोतों से उपलब्ध सूचनाओं को कृषि अनुसंधान डाटा पुस्तिका 2006 के रूप में संकलित किया गया जो इस श्रृंखला की दसवीं कड़ी है।
- पशु प्रजनन 2 के लिए एक सांख्यिकीय पैकेज (एस पी ए बी 2) विकसित किया गया।
- गेहूँ फसल प्रबन्धन पर विशेषज्ञ सलाह उपलब्ध कराने के लिए एक विशेषज्ञ तंत्र विकसित किया गया।
- निसेजनेट परियोजना के अन्तर्गत सॉफ्टवेयर एप्लीकेशन के दो सेट विकसित किये गये (एक सहभागी संगठनों के स्थानीय सर्वर पर आँकड़ों के प्रबन्धन के लिए और दूसरा भा.कृ.सां.अ.सं., नई दिल्ली में केन्द्रीय सर्वर पर आँकड़े एकीकरण के लिए) भा.कृ.सां.अ.सं. में केन्द्रीय सर्वर पर एक पूछताछ/रिपोर्ट पर उपलब्ध सिस्टम देश, राज्य, विश्वविद्यालय और/अथवा कॉलेज स्तर पर भी सूचना उपलब्ध कराने की क्षमता रखता है।
- सर्वेक्षण आँकड़ों के विश्लेषण, सर्वेक्षण आँकड़ों के प्रबन्धन, आरोपण, प्रतिचयन विधियों की क्लास लाइब्रेरीज के माइयूल्सों के लिए सॉफ्टवेयर का विकास नामक परियोजना के अन्तर्गत पुनःउपयोगी क्लास लाइब्रेरीज के रूप में प्रतिस्थापन सहित तथा प्रतिस्थापन बिना प्रतिचयन योजनाओं के लिए विस्तृत सांख्यिकी एवं निर्गम (आउटपुट) माइयूल्स विकसित किये गये।
- नये आँकड़ों के मानों तथा भा.कृ.अनु.प. की आवश्यकताओं के अनुसार परमिसनेट-II को अद्यतन किया गया। संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर के जर्नलों

में 48 शोध-पत्र, 25 लोकप्रिय लेख, 4 पुस्तक अध्याय, 6 परियोजना/ तकनीकी रिपोर्टें और 2 ई-पुस्तकें प्रकाशित की गयीं।

संस्थान की संशोधित भावी योजना - विज्ञान-2025 को भी अन्तिम रूप दिया गया।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की 'राजर्षि टण्डन राजभाषा पुरस्कार योजना' के अन्तर्गत संस्थान ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

संस्थान द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका सांख्यिकी विमर्श 2006-07 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् का गणेश शंकर विद्यार्थी (द्वितीय) पुरस्कार प्रदान किया गया।

संस्थान में परीक्षण अभिकल्पना प्रभाग के प्रधान एवं प्रोफेसर (कृषि सांख्यिकी) डॉ. वी.के. शर्मा को वर्ष 2006 के दौरान कृषि सांख्यिकी विषय के अध्यापन में उत्कृष्ट योगदान के लिए भा.कृ.अ.सं., नई दिल्ली द्वारा उत्कृष्ट अध्यापक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

भा.कृ.अनु.प. के राष्ट्रीय अध्येता, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को 01 जनवरी, 2007 से राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी का 'एसोसिएट फैलो' चुना गया।

राष्ट्रीय अध्येता डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को 24 मई से 28 जून, 2006 के दौरान (सी.आई.एम.एम.वई.टी.) मैक्सिको में राइस व्हीट कन्सोर्टियम फॉर इन्डो-गैनेटिक प्लेन्स द्वारा संचालित किसान सहभागी अनुसंधान परीक्षणों के विश्लेषण पर अनुभव प्राप्त करने के लिए अध्ययन दौरे पर प्रतिनियुक्त किया गया। उन्हें दिनांक 13-16 फरवरी, 2007 के दौरान काठमांडू, नेपाल में आयोजित राइस-व्हीट कन्सोर्टियम फॉर इन्डो-गैनेटिक प्लेन्स की 14वीं क्षेत्रीय तकनीकी समन्वय समिति की बैठक में सहभागिता करने हेतु भी प्रतिनियुक्त किया गया।

संस्थान के वैज्ञानिकों को विभिन्न राष्ट्रीय/अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करने हेतु प्रतिनियुक्त किया गया।

हिन्दी को प्रोत्साहन देने के लिए संस्थान में एक शोध-पत्र पोस्टर प्रस्तुति प्रतियोगिता आयोजित की गयी और जिसमें हिन्दी पोस्टर तैयार करने के लिए वैज्ञानिकों को पुरस्कृत किया गया।

भारतीय कृषि सांख्यिकी संस्था की स्थापना की हीरक जयन्ती के अवसर पर भा.कृ.सां.अ.सं., नई दिल्ली द्वारा 27-30 दिसम्बर, 2006 के दौरान सांख्यिकी एवं सूचना में कृषि अनुसंधान पर अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन- ICSI, 2006 आयोजित किया गया। सम्मेलन में 155 पोस्टर प्रस्तुत किये गये। सम्मेलन में अनेक महत्वपूर्ण संस्तुतियाँ की गयीं।

सम्मेलन के आरम्भ में दिनांक 26 दिसम्बर, 2006 को 'हॉटस्पॉट ज्योइन्फॉरमेटिक्स' तथा 'रिग्रेशन डायग्नोस्टिक्स' पर दो पूर्व-सम्मेलन

कार्यशालाएँ आयोजित की गयीं।

निसेजनेट के लिए विकसित एप्लीकेशन सॉफ्टवेयरों की संस्थापना तथा क्रियान्वयन के लिए एक दो-दिवसीय ऑन-साइट प्रशिक्षण आयोजित किया गया तथा यह सॉफ्टवेयर समस्त 42 सहभागी संस्थाओं के लिए LAN पर प्रचालित किया गया।

भा.कृ.अनु.प. के परमिसनेट ऐण्ड इन्टेलीजेन्ट रिपोर्टिंग सिस्टम पर एन.ए.एस.सी. परिसर, पूसा, नई दिल्ली में एक दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गयी।

मलेशिया के सांख्यिकी विभाग के तीन सदस्यों के शिष्ट मण्डल के लिए एक अध्ययन दौरा आयोजित किया गया।

विभिन्न वर्गों के लिए अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम जैसे - उच्च अध्ययन केन्द्र के अन्तर्गत प्रशिक्षण, ग्रीष्म कालीन स्कूल, राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय प्रायोजित एवं तदर्थ प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये।

संस्थान की शिक्षण एवं प्रशिक्षण से सम्बन्धित गतिविधियाँ, जिनमें समस्त स्नातकोत्तर अध्यापन कार्यक्रमों का नियोजन, आयोजन एवं समन्वयन सम्मिलित है, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के पी.जी. स्कूल के सहयोग से चलायी गयीं। इस वर्ष कुल 12 छात्रों {4 पी.एच.डी. (कृषि सांख्यिकी), 5 एम.एस.सी. (कृषि सांख्यिकी) एवं 3 एम.एस.सी. (संगणक अनुप्रयोग)} ने अपना डिग्री पाठ्यक्रम पूरा किया। 12 नए छात्रों {2 पी.एच.डी. (कृषि सांख्यिकी), 5 एम.एस.सी. (कृषि सांख्यिकी) एवं 5 एम.एस.सी. (संगणक अनुप्रयोग)} को प्रवेश दिया गया।

भारत एवं सार्क देशों सहित विदेश के अनुसंधान संस्थानों/विश्वविद्यालयों में सांख्यिकीय आँकड़ों के संकलन, विश्लेषण एवं विवेचना के कार्य में लगे शोधकर्ताओं के लाभार्थ 'कृषि सांख्यिकी एवं संगणन' में एक उच्च प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम में 6 अधिकारियों ने सहभागिता की।

संस्थान का पुस्तकालय राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली (NARS) के अन्तर्गत देश का एक क्षेत्रीय पुस्तकालय है जो संस्थान के प्रयोक्ताओं के साथ-साथ अन्य अनुसंधान संगठनों के प्रयोक्ताओं की सूचना सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। पुस्तकालय की सेवाओं को पूरी तरह से डिजिटाइज्ड कर दिया गया है जो पुस्तकालय की वेबसाइट (<http://lib.iasri.res.in>) पर उपलब्ध है। इस पुस्तकालय में उपलब्ध सभी संसाधनों और सेवाओं के लिंक दिये गये हैं।